Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

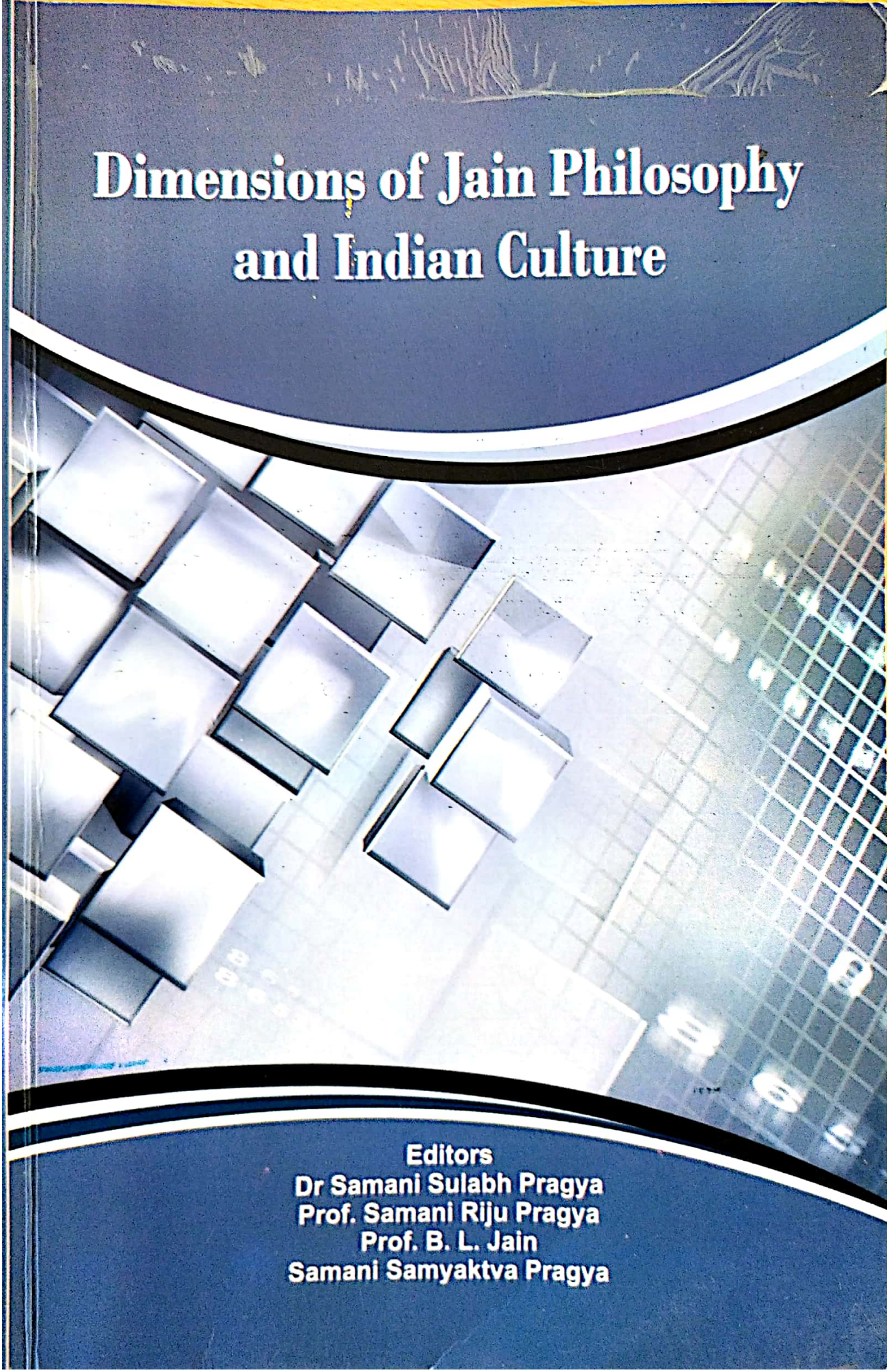

Editors
Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

Scanned by CamScanner

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

Scanned by CamScanner

Contents

Section-1 (A) : Jain Philosophy

1. प्राचीन जैन साहित्य में शरीर और चिकित्सा विज्ञान 3-16
   प्रो. दामोदर शास्त्री
2. आगम व्याख्या-साहित्य में प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त 17-27
   प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा
3. आचार्य महाप्रज्ञ-साहित्य में अध्यात्म-विकास की भूमिकाएं 29-42
   प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा एवं डॉ. समणी श्रेयसप्रज्ञा
4. जैनदर्शन में समुद्घात की अवधारणा 43-57
   समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा
5. **Number Theory: A Mathematical Solution of Metaphysical Problems in Jaina *Āgama*** 59-72
   Dr Samani Vinay Pragya
6. **Communication and our Relations** 73-84
   Dr Samani Aagam Pragya
7. जैन परंपरा में मान्य सूर्य एवं चन्द्रमाँ का स्वरूप 85-95
   डॉ. योगेश कुमार जैन
8. पर्यावरण संरक्षण और जैन धर्म 97-103
   डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
9. पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन 105-119
   डॉ. समणी हिमप्रज्ञा
10. सामायिक आवश्यक : एक अनुशीलन 121-141
    डॉ. मुमुक्षु वन्दना मेहता

Section-1 (B) : Experimental Researches on Preksha Meditation

11. **Role of Preksha Meditation in Improvement of Blood Count and Biochemistry of Adults** 145-154
    Dr Pradyumna Singh Shekhawat

Scanned by CamScanner

जैनदर्शन में समुद्घात की अवधारणा

*****

*समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा

सारांशिका

जीव असंख्य प्रदेशों का संघात है। वे प्रदेश सदा अविभक्त रहते हैं। कर्म शरीर के कारण उनकी रचना बदलती रहती है। उनका संकोच और विस्तार होता रहता है। जीव के प्रदेशों का संकोच होता है, उसके अनुरूप तैजस और कर्म शरीर के प्रदेशों का भी संकोच हो जाता है। जीव के प्रदेशों के विस्तार के अनुरूप ही तैजस और कर्म शरीर के प्रदेशों का विस्तार हो जाता है। इस संकोच और विस्तार की प्रक्रिया को शरीर बंध कहा गया है। इसका मुख्य हेतु है–समुद्घात। जैन दर्शन में समुद्घात की नवीन एवं वैज्ञानिक अवधारणा है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही परम्परा में समुद्घात का सिद्धान्त मान्य हैं। विभिन्न परिस्थितियों में शरीर के आत्मप्रदेशों के बाहर निकलने की प्रक्रिया समुद्घात है। समुद्घात की अवस्था में जीव के आत्मप्रदेश बाहर फैलते है और उसकी परिसम्पन्नता पर फिर सिमटकर जीवस्थ हो जाते है। समुद्घात के सात भेद है। जैसे पतंग आकाश में कितनी ही ऊंची उड़े पर उसकी डोर उड़ाने वाले के हाथ में जुड़ी रहती है। उसी प्रकार सब समुद्घातों में बाहर फैलने वाले आत्मप्रदेशों का आत्मा के साथ तार जुड़ा हुआ रहता है। इस आलेख के माध्यम से समुद्घात के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। शरीर के आत्मप्रदेश कब–कब व किन–किन परिस्थितियों में बाहर निकलते है, इसका विशद वर्णन इसमें किया गया है।

सम्बद्ध शब्दः *समुद्घात, शरीर, वेदना, कषाय, मारणान्तिक, वैक्रिय, आहारक, केवली, कार्मण।*

---

*सहायक आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं 341306 (राजस्थान)

Scanned by CamScanner